साप्ताहिक
Live not just breaTHE
दि कार्मिक पोस्ट
MPHIN/2015/63220
MP/IDC1528/22-23
Global School Of Excellence, Obedullaganj
Email- thekaarmiicpost@gmail.com
वर्ष : 12, अंक : 12 (प्रति बुधवार), इन्दौर, 18 मार्च 2026 से 24 मार्च 2026 पेज : 8 कीमत : 3 रुपये

जलवायु में बड़ा बदलाव

दक्षिणी महासागर में तूफानी बारिश में वृद्धि, समुद्री जीवन पर भारी असर

दुनिया के सबसे दूर और तूफानी समुद्री क्षेत्रों में से एक, मैक्क्वेरी द्वीप पर किए गए नए शोध से पता चला है कि यहां बारिश तेजी से बढ़ रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि यह बदलाव सिर्फ एक छोटे द्वीप की कहानी नहीं है, बल्कि यह पूरे दक्षिणी महासागर की जलवायु में बड़े परिवर्तन का संकेत हो सकता है। यह शोध वेदर एंड क्लाइमेट डायनामिक्स पत्रिका में प्रकाशित हुआ है। इस अध्ययन से पता चलता है कि दक्षिणी महासागर के तूफान पहले की तुलना में ज्यादा बारिश ला रहे हैं।

मैक्क्वेरी द्वीप तस्मानिया और अंटार्कटिका के बीच स्थित एक दूरस्थ और हवा से भरा हुआ द्वीप है। यह जगह अपने अनोखे वन्यजीवों के लिए जानी जाती है।

यहां बड़ी संख्या में हाथी सील समुद्र तट पर आराम करते दिखाई देते हैं। पहाड़ियों पर किंग पेंगुइन समूहों में चलते हैं। आसमान में बड़े अल्बाट्रॉस पक्षी उड़ते रहते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में वैज्ञानिकों ने देखा कि इस द्वीप की जमीन बदल रही है। कई ढलानें ज्यादा गीली और दलदली हो रही हैं। कुछ खास बड़े पौधे, जिन्हें मेगाहर्ब कहा जाता है, अब पहले की तरह नहीं उग रहे हैं।

वैज्ञानिकों को पहले से शक था कि इसका कारण बढ़ती बारिश हो सकती है। अब नए अध्ययन ने इस बात की पुष्टि कर दी है। दक्षिणी महासागर पृथ्वी की जलवायु के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। यह महासागर वातावरण में मौजूद अतिरिक्त गर्मी और कार्बन डाइऑक्साइड को काफी मात्रा में अपने अंदर ले लेता है।

इस वजह से यह ग्लोबल वार्मिंग को कुछ हद तक धीमा करने में मदद करता है। इसके अलावा, इस क्षेत्र के तूफान ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और दुनिया के कई हिस्सों के मौसम को प्रभावित करते हैं। लेकिन समस्या यह है कि यह पृथ्वी के सबसे कम देखे गए क्षेत्रों में से एक है। यहां बहुत कम मौसम स्टेशन हैं और अक्सर बादल छाए रहते हैं, इसलिए उपग्रहों और कंप्यूटर मॉडल के लिए सही जानकारी जुटाना मुश्किल होता है। मैक्क्वेरी द्वीप पर मौसम का रिकॉर्ड लगभग 75 साल से रखा जा रहा है। यह काम ऑस्ट्रेलियाई मौसम विज्ञान ब्यूरो और ऑस्ट्रेलियाई अंटार्कटिक डिवीजन द्वारा किया जाता है। इस रिकॉर्ड में रोज की बारिश, हवा, तापमान और दबाव की जानकारी शामिल है।

वैज्ञानिकों ने 1979 से 2023 तक के 45 साल के आंकड़ों का विश्लेषण किया। उन्होंने इन आंकड़ों की तुलना एक वैश्विक मौसम मॉडल ईआरए5 पुन:विश्लेषण से भी की।

अध्ययन में पाया गया कि 1979 के बाद से मैक्क्वेरी द्वीप पर सालाना बारिश में लगभग 28 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह हर साल लगभग 260 मिलीमीटर अतिरिक्त बारिश के बराबर है।

दिलचस्प बात यह है कि ईआरए5 मॉडल केवल आठ प्रतिशत वृद्धि दिखाता है। इसका मतलब है कि वास्तविक बदलाव मॉडल से कहीं ज्यादा बड़ा है। तूफान अब ज्यादा बारिश ला रहे हैं शोधकर्ताओं ने यह समझने की कोशिश की कि बारिश क्यों बढ़ रही है। उन्होंने मौसम के पैटर्न को पांच अलग-अलग प्रकारों में बांटा। इनमें कम दबाव वाले तूफान, ठंडी हवा के झोंके और गर्म हवा का आगे बढ़ना शामिल था।

अध्ययन से पता चला कि तूफानों की संख्या में बहुत ज्यादा बदलाव नहीं हुआ है। लेकिन जब तूफान आते हैं, तो वे पहले से ज्यादा बारिश कराते हैं। दूसरे शब्दों में, अब हर तूफान ज्यादा नमी लेकर आता है। अगर यही स्थिति पूरे दक्षिणी महासागर में हो रही है, तो इसके बड़े परिणाम हो सकते हैं। अधिक बारिश का मतलब है कि महासागर की सतह पर ज्यादा ताजा पानी पहुंचेगा। इससे समुद्र के ऊपरी हिस्से की परतें मजबूत हो सकती हैं और पानी का आपस में मिलना कम हो सकता है। इससे महासागरीय धाराओं की ताकत और दिशा बदल सकती है। दक्षिणी महासागर दुनिया के सबसे बड़े कार्बन अवशोषकों में से एक है। अगर पानी की परतें बदलती हैं, तो पोषक तत्वों और कार्बन का प्रवाह भी बदल सकता है। इससे समुद्री जीवन और पूरे महासागर की रसायन प्रक्रिया प्रभावित हो सकती है।

साल 2050 तक कोलंबिया में कोको की जमीन के पांचवें हिस्से के गायब होने के आसार

कोलंबिया में कोको की खेती भविष्य में जलवायु परिवर्तन की वजह से बड़े बदलावों का सामना कर सकती है। हाल ही में किए गए एक अध्ययन में पता चला है कि 2050 तक वर्तमान में कोको के लिए उपयुक्त क्षेत्रों में से लगभग 20 फीसदी इलाका जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल नहीं रह पाएंगे। विशेष रूप से यह कैरेबियाई क्षेत्र के निचले इलाकों और देश के उत्तर-पूर्वी विभागों में होगा।

रीजनल एनवायरमेंटल चेंज नामक पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन के अनुसार, सबसे ज्यादा नुकसान निचले क्षेत्रों में होने के आसार हैं। इन क्षेत्रों में शामिल कैरेबियाई क्षेत्र- एटलांटिको, बोलिवर, सेसर, कॉर्डोबा, सुक्रे, और एंटिओकिया, जबकि उत्तर-पूर्वी विभाग- अराउका, कसनारे, मेता, और विचाडा शामिल हैं।

2050 तक वर्तमान कोको क्षेत्रों का लगभग 20 फीसदी जलवायु बदलाव के कारण फसल के उगने योग्य नहीं रहेगा। जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान बढ़ेगा और अनियमित बारिश या अधिक तीव्र होगी। इससे उपज कम हो सकती है, फसल पर तनाव बढ़ सकता है और कोको किसान परिवारों के लिए आर्थिक अस्थिरता बढ़ सकती है। शोध पत्र में शोधकर्ता के हवाले से कहा गया है कि हाल की घटनाएं, जैसे उत्तर कोलंबिया में हुई ठंडी लहर और बाढ़, दिखाती हैं कि जलवायु परिवर्तन और जलवायु अस्थिरता पहले से ही वास्तविक प्रभाव डाल रही है। अध्ययन से यह भी पता चला है कि सभी क्षेत्रों में नुकसान समान नहीं होगा। आंधीज की तलहटी - जहां वर्तमान में अधिकांश कोको उत्पादन होता है, इनमें जलवायु अनुकूल बनी रहेगी। इसके अलावा अध्ययन में लगभग तीन फीसदी नए उपयुक्त क्षेत्र की संभावना बताई गई है। ये मुख्य रूप से ऊंचाई वाले क्षेत्रों में होंगे, जो संकेत देते हैं कि कोको की खेती भविष्य में भूगोलिक रूप से स्थानांतरित हो सकती है। इसका मतलब है कि कोलंबिया में कोको खत्म नहीं होगा, बल्कि धीरे-धीरे नए क्षेत्रों में फैलेगा। 2050 तक वर्तमान कोको क्षेत्रों का लगभग 20 फीसदी जलवायु बदलाव के कारण फसल के उगने योग्य नहीं रहेगा। अध्ययन में यह पाया गया कि जंगली कोको नई परिस्थितियों में फैल सकता है। जंगली कोको की विशेषता यह है कि यह अत्यधिक जलवायु परिस्थितियों में भी जीवित रह सकता है। टॉबियास फ्रेमाउट, एलायंस ऑफ बायोवर्सिटी इंटरनेशनल और सीआईएटी के शोधकर्ता, ने कहा, जंगली कोको में ऐसे आनुवंशिक गुण होते हैं जो इसे भविष्य में जलवायु परिवर्तन के प्रति अधिक लचीला बनाते हैं। जो पौधे बहुत गर्म, बहुत सूखे

या बहुत गीले क्षेत्रों में बढ़ते हैं, वे विशेष रूप से हमारे लिए मूल्यवान हैं। इसलिए देश के निचले इलाकों के जंगलों का संरक्षण करना बहुत जरूरी है, क्योंकि ये आनुवंशिक विविधता का महत्वपूर्ण स्रोत हैं। 2050 तक वर्तमान कोको क्षेत्रों का लगभग 20 फीसदी जलवायु बदलाव के कारण फसल के उगने योग्य नहीं रहेगा। अध्ययन के अनुसार, कोको किसानों को कुछ अनुकूलन रणनीतियों को अपनाना चाहिए - एग्रोफॉरेस्ट्री सिस्टम - कोको के पेड़ों को अन्य पेड़ों की छाया में उगाना, जिससे तापमान संतुलित रहता है और मिट्टी की नमी बनी रहती है। पूरक सिंचाई - उन क्षेत्रों में जहां सूखा अधिक होता है, सिंचाई उत्पादन को स्थिर रख सकती है। लचीले आनुवंशिक स्रोत - जंगली कोको की विशेषताओं वाला अधिक लचीला कोको विकसित करना। फरवरी 2025 में बढ़ेगी गर्मी, गेहूं सहित अन्य फसलों को हो सकता है नुकसान- मौसम विभाग की चेतावनी 2050 तक वर्तमान कोको क्षेत्रों का लगभग 20 फीसदी जलवायु बदलाव के कारण फसल के उगने योग्य नहीं रहेगा। विज्ञान आधारित योजना - मौसम और जलवायु के आंकड़ों का उपयोग करके किसानों को सही निर्णय लेने में मदद करना।

इन उपायों को लागू करके, कोलंबिया के कोको किसान जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम कर सकते हैं और उत्पादन को स्थायी बना सकते हैं।

पर्यावरण मंजूरी में तेजी पर विशेषज्ञों की चिंता, नई संस्थाओं पर सवाल

नई दिल्ली। विशेषज्ञों ने पर्यावरण मंजूरी की प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में केंद्र द्वारा प्रस्तावित नई स्थायी संस्थाओं में सदस्यों के चयन मानदंडों पर चिंता व्यक्त की है। उनका मानना है कि इससे परियोजनाओं की जांच-पड़ताल कमजोर हो सकती है।

पांच मार्च को जारी मसौदा अधिसूचना के अनुसार, राज्य पर्यावरण प्रभाव आकलन प्राधिकरणों (एसईआइएए) और राज्य विशेषज्ञ मूल्यांकन समितियों (एसईएसी) का कार्यकाल समाप्त होने या पुनर्गठन में देरी होने पर ये काम करना बंद कर देंगी। एसईआइएए पर्यावरण मंजूरी देता है, तो एसईएसी परियोजना के मूल्यांकन में उसे सलाह देता है। इनके स्थान पर नई संस्थाएं- पर्यावरण प्रभाव आकलन पर स्थायी प्राधिकरण (एसएईआइए) और पर्यावरण प्रभाव मूल्यांकन पर स्थायी समिति (एससीईआइए) काम संभालेंगी। इसमें %%पदेन सदस्य%% होंगे, जिसका अर्थ है केंद्र सरकार द्वारा नामित सरकारी अधिकारी या ब्यूरोक्रेट। सेंटर फार साइंस एंड एनवायरनमेंट में शोधकर्ता शुभ्रजीत गोस्वामी ने बताया, %%यह कदम पर्यावरण प्रभाव आकलन अधिसूचना, 2006 के परिशिष्ट-6 की कानूनी बाध्यता की अनदेखी करता है। इसके अनुसार, अध्यक्ष और सदस्यों के पास संबंधित क्षेत्र का पर्याप्त अनुभव होना अनिवार्य है, जैसे वे 15 वर्षों का अनुभव रखने वाले प्रख्यात विशेषज्ञ हों या संबंधित क्षेत्रों में उनके पास पीएचडी की डिग्री हो। उन्होंने कहा, %%प्रशासनिक निगरानी अक्सर कारोबारी सुगमता पर अधिक जोर देती है, जिससे किसी स्थल-विशेष की पारिस्थितिकी की अनदेखी हो सकती है, जिसके बारे में कोई अनुभवी वनस्पति शास्त्री या पर्यावरण इंजीनियर चेता सकता है। जिंदल ग्लोबल लॉ स्कूल के प्रोफेसर नवनीत विभव ने कहा, हालांकि पदेन सदस्यों के पास पर्यावरण मंजूरी जैसे मुद्दों से निपटने के लिए आवश्यक तकनीकी ज्ञान या विशेषज्ञता हो सकती है, फिर भी मसौदा अधिसूचना में पात्रता मानदंडों को स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है।

तालाबों और बावड़ियों को बचाने के लिए शुरु होगा जलगंगा संवर्धन अभियान

इंदौर। अगले माह से पूरे प्रदेश में इंदौर की तर्ज पर जलगंगा संवर्धन अभियान प्रारंभ किया जा रहा है। इस अभियान की कमान पांच हजार अमृत मित्र के हाथों में होगी इन मित्रों द्वारा जलसंरचनाओं का जीर्णोद्धार कराया जाएगा और तलाबों, बावड़ियों और नालों पर किए गए अतिक्रमण को भी हट्टाया जाएगा। इस संबंध में नगरीय प्रशासन विभाग ने अपनी गाइडलाइन जारी कर दी है। इस कार्ययोजना में पांच हजार युवाओं को अमृत मित्र के रुप में पंजीकृत किया जाएगा। इसी के साथ एक करोड़ पौधे भी अमृत २.० के तहत निकायों की ३०० एकड़ भूमि पर हरित क्षेत्र के रुप में लगाये जाएंगे।

कार्ययोजना को लेकर निकायों को भेजे गये निर्देश में निर्देशित किया गया है कि वे नदियों तालाबों, बावड़ियों और नालों के किनारों पर किए गए अतिक्रमण को चिन्हित कर तत्काल हटाने की प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित करें। तालाब तक आने वाली सभी जलसंरचनाओं को उनके प्राकृतिक स्वरुप में लौटाया जाएगा। कार्ययोजना में पौधारोपण भी शामिल किया गया है। इस पर २९ करोड़ रुपये की राशि आगामी मानसून सत्र के दौरान खर्च की जाएगी। एक करोड़ से अधिक पौधे रोपने की तैयारी सभी नगरीय निकायों करने के निर्देश दिये गये हैं। प्रदेश में पहली बार ११२ से अधिक जल संग्रहण संरचनाओं के जीर्णोद्धार पर ६७ करोड़ रुपये का निवेश किया जा रहा है। स्वच्छ भारत मिशन के तहत नदियों को भी प्रदूषण से मुक्त करने के लिए ६४४ करोड़ रुपये व्यय किए जाने की योजना बनाई गई है। यह पूरा अभियान नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय की देखरेख में चलेगा। उल्लेखनीय है कि इंदौर में कैलाश विजयवर्गीय ५१ लाख पौधे लगाये जाने के अभियान को चला चुके है अब सभी पौधे धीरे धीरे पेड़ का आकार लेने लगे हैं।

बेटियों और महिलाओं का कल्याण हमारी प्राथमिकता, सरकार उठा रही सभी कदम लाड़ली लक्ष्मी योजना से लिंगानुपात में हो रहा सुधार

भोपाल मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि जहां बेटियां जन्म से लेकर आजीवन पूजी जाती हैं, वह सिर्फ़ और सिर्फ़ अपना मध्यप्रदेश ही है। नारी सदैव पूजनीय हैं। हम अपने देश को भी जननी मानकर भारत माता की जय कहकर पूजते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार बेटियों और महिलाओं के समग्र विकास के लिए पूरी प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है। सरकार की योजनाएं महिलाओं के जीवन में हर कदम पर पक्की सहेली बनकर उनके साथ खड़ी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव बुधवार को दमोह जिले के हटा में महिला सशक्तिकरण सम्मेलन सह शिलान्यास कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी योजना के कारण प्रदेश के लिंगानुपात में व्यापक सुधार हुआ है। साथ ही बेटियों के प्रति समाज की सोच में भी सकारात्मक परिवर्तन आया है। उन्होंने कहा कि लाड़ली बहनों की प्रगति और आशीर्वाद से ही प्रदेश में समृद्धि आ रही है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सिंगल क्लिक से दमोह जिले के लिए 405 करोड़ 58 लाख रुपये से अधिक की लागत के 13 विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। इसमें लगभग 232 करोड़ रूपए की लागत से हटा से गैसाबाद सिमरिया मार्ग (एसएच-55) के 73 किमी मार्ग के टू-लेन रोड के रूप में उन्नयन एवं चौड़ीकरण, 74 करोड़ 44 लाख रूपए की लागत से मडियादो से बर्धा किशनगढ़ सड़क निर्माण और 48 करोड़ 89 लाख रूपये की लागत से मड़ियादो से रजपुरा मार्ग के निर्माण कार्य का भूमि-पूजन शामिल है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विरासत से विकास के मूल मंत्र को अपनाते हुए प्रदेश में उल्लेखनीय कार्य किए जा रहे हैं। विगत वर्ष बुंदेलखंड क्षेत्र के वैश्विक पर्यटन स्थल खजुराहो में स्टेट कैबिनेट की मीटिंग कर सरकार ने 27 हजार 500 करोड़ रूपए से अधिक के विकास कार्यों को मंजूरी दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हाल में ही सर्वाइकल कैंसर की वैक्सीन का टीकाकरण शुरू हुआ है। उन्होंने सभी माताओं-बहनों से अपील करते हुए कहा कि अपनी 14 वर्ष से अधिक उम्र कीबेटियों को यह टीका अवश्य लगवाएं और दूसरे लोगों को भी ऐसा ही करने के लिए जागरूक करें। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बताया कि यह टीका पूरी तरह सुरक्षित है, इससे हमारी बेटियों का भविष्य आजीवन सुरक्षित रहेगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने एचपीवी वैक्सीन का टीका लगवाने वाली हटा की 8 बेटियों को मंच से प्रमाण पत्र भी सौंपे। मुख्यमंत्री ने पात्र हितग्राहियों को हितलाभ भी वितरित किए। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हटावासियों की बहुप्रतीक्षित मांग पूरी करते हुए हटा का नाम बदलकर इसे शिवकाशी नाम देने की घोषणा की। उन्होंने कहा कि हटा श्री श्री 1008 देवश्री गौरीशंकर की नगरी है, इसलिए अब इसे शिवकाशी के रूप में ही जाना जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने हटावासियों को और भी कई सौगातें दीं। उन्होंने घोषणा करते हुए कहा कि हटा में नवीन आईटीआई भवन बनाया जाएगा। हटा में सर्वसुविधायुक्त नवीन नगर पालिका भवन एवं भव्य गीता भवन भी निर्मित किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि कृषि एवं पशुपालन क्षेत्र में कार्य का दायदा बहुत विस्तृत है, इसलिए हटा के महाविद्यालय में अब कृषि, उद्यानिकी एवं पशुपालन संकाय/विषय भी पढ़ाये जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि विनती-मड़ियादौ-चौरईया मार्ग का चौड़ीकरण कराया जाएगा। हटा के शासकीय पीएमश्री महारानी लक्ष्मीबाई स्कूल में इंडोर ऑडिटोरियम बनाया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने पटेरा में नया महाविद्यालय खोले जाने की घोषणा करते हुए कहा कि मड़ियादो एवं देवरी फतेहपुर में नया हायर सेकेण्डरी भवन बनाया जाएगा। इसी प्रकार नगर परिषद तेंदूखेड़ा में तारादेही तिराहे से चौरई तक मार्ग चौड़ीकरण एवं सौन्दर्यीकरण कार्य कराए जाएंगे। नगर परिषद तेंदूखेड़ा में वार्ड क्रमांक 3 में सी.सी. रोड निर्माण कराया जाएगा। गहरा से चौपरा-सिमरी तक मार्ग का चौड़ीकरण किया जाएगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि दमोह जिले में औद्योगिक गतिविधियों का विस्तार किया जाएगा।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में केन-बेतवा नदी लिंक परियोजना के जरिए बुंदेलखंड के हर खेत को सिंचाई के लिए पानी मिलेगा। खेतों में फसलें लहलहाएंगी, अब हटा से कोई रोजगार की तलाश में बाहर नहीं जाएगा। उन्होंने कहा कि प्रदेश में सिंचाई का रकबा अब 55 लाख हैक्टेयर तक पहुंच गया है। इसमें 10 लाख हैक्टेयर रकबा तो पिछले 2 साल में ही बढ़ा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्रदेश में महिला कल्याण से जुड़ी योजनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि सरकार का लक्ष्य महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाना है। बेटियों और महिलाओं को आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनाने के लिए हम कोई कसर नहीं रखेंगे। महिलाओं की खुशहाली में ही प्रदेश की खुशहाली है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हमने 2 दिन पहले महिला दिवस मनाया है। अब आगे नवरात्रि आ रही है। राज्य सरकार नारी कल्याण के लिए समर्पित है। प्रदेश की एक करोड़ 25 लाख से अधिक लाड़ली बहनों को हर माह सम्मानपूर्वक 1500 रुपए की प्रोत्साहन राशि दी जा रही है।

ई-वाहनों से होगा कूड़ा उठान प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण के साथ खर्च घटाने की नई पहल

देहरादून- उत्तराखंड में शहरी स्वच्छता व्यवस्था को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए कूड़ा उठान प्रबंधन में बड़ा बदलाव किया जा रहा है. राज्य सरकार अब इस व्यवस्था में इलेक्ट्रिक वाहनों के इस्तेमाल को बढ़ावा देने की तैयारी कर रही है. खास बात यह है कि पहली बार राज्य के नगर निकायों में कूड़ा उठान के लिए इस तरह की व्यवस्था लागू करने की योजना बनाई गई है. इसका उद्देश्य केवल स्वच्छता व्यवस्था को बेहतर बनाना ही नहीं बल्कि पर्यावरण संरक्षण और खर्च में कमी जैसे दो महत्वपूर्ण लक्ष्यों को भी हासिल करना है.

दरअसल राज्य के नगर निगमों, नगर पालिकाओं और नगर पंचायतों के लिए कूड़ा उठान और उसके प्रबंधन की व्यवस्था लंबे समय से एक बड़ी चुनौती रही है. इस कार्य के लिए निकायों को बड़ी संख्या में मानव संसाधन की जरूरत पड़ती है. इसके साथ ही कूड़ा ढोने के लिए वाहनों की व्यवस्था, उनका रखरखाव और ईंधन पर होने वाला खर्च भी निकायों के बजट पर भारी पड़ता है. ऐसे में अब शहरी विकास विभाग इस व्यवस्था को आधुनिक और पर्यावरण अनुकूल बनाने के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों को शामिल करने की दिशा में कदम उठा रहा है. योजना के तहत नगर निकायों में कूड़ा उठान के लिए अलग-अलग प्रकार के इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद की जाएगी. इनमें छोटे ई-वाहनों से लेकर बड़े ई-ट्रकों तक शामिल होंगे, ताकि शहरों की गलियों से लेकर मुख्य सड़कों तक कूड़ा उठान का काम आसानी से किया जा सके. इन वाहनों के संचालन के लिए आवश्यक बुनियादी ढांचे को भी तैयार किया जाएगा. खास तौर पर ई वाहनों की चार्जिंग की जरूरत को देखते हुए विभिन्न स्थानों पर ई चार्जिंग स्टेशन स्थापित किए जाने की योजना है.

सरकार की योजना के अनुसार पहले चरण में करीब 50 छोटे इलेक्ट्रिक वाहन और लगभग 80 ई-ट्रक खरीदे जाएंगे. इन वाहनों का उपयोग मुख्य रूप से नए नगर निकायों में किया जाएगा, जहां कूड़ा उठान व्यवस्था को शुरू से ही आधुनिक और पर्यावरण के अनुकूल बनाया जा सके. इस पहल को राज्य में स्वच्छता प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण प्रयोग के रूप में देखा जा रहा है.हालांकि राज्य के सभी क्षेत्रों में फिलहाल इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग संभव नहीं माना जा रहा है. विशेष रूप से पर्वतीय क्षेत्रों में भौगोलिक परिस्थितियों और लंबी दूरी को देखते हुए वहां फिलहाल डीजल वाहनों का उपयोग जारी रहेगा. लेकिन जिन नगर निकायों में इलेक्ट्रिक वाहन प्रभावी तरीके से काम कर सकते हैं, वहां उन्हें प्राथमिकता दी जाएगी. इससे एक ओर पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा, वहीं निकायों के खर्च में भी कमी आएगी.शहरी विकास विभाग के अनुसार वर्तमान में अधिकांश नगर निकायों में कूड़ा उठान के लिए डीजल से चलने वाले वाहन इस्तेमाल किए जाते हैं. इन वाहनों के संचालन में ईंधन पर काफी खर्च आता है, जो निकायों के लिए आर्थिक बोझ बन जाता है. वहीं इलेक्ट्रिक वाहनों के उपयोग से ईंधन पर होने वाला यह खर्च काफी हद तक कम किया जा सकता है. साथ ही इनसे प्रदूषण भी कम होगा, जिससे शहरों की वायु गुणवत्ता बेहतर रखने में मदद मिलेगी. शहरी विकास सचिव नितेश झा का कहना है कि उत्तराखंड में पर्यावरण संरक्षण को हमेशा प्राथमिकता दी जाती रही है. इसी सोच के तहत शहरी विकास विभाग भी अपने स्तर पर पर्यावरण के अनुकूल व्यवस्थाओं को बढ़ावा देने की दिशा में काम कर रहा है. उनका कहना है कि कूड़ा उठान व्यवस्था में इलेक्ट्रिक वाहनों का उपयोग इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा. पहले चरण में जिन नगर निकायों के लिए इलेक्ट्रिक वाहनों की खरीद की योजना बनाई गई है, उनमें उधम सिंह नगर जिले के चार निकाय, देहरादून का एक निकाय, हरिद्वार जिले के पांच निकाय और टिहरी जिले का एक निकाय शामिल है. इन स्थानों पर ई-वाहनों के जरिए कूड़ा उठान व्यवस्था को लागू कर इसके परिणामों का आकलन भी किया जाएगा.यदि यह व्यवस्था सफल साबित होती है तो आने वाले समय में इसे राज्य के अन्य नगर निकायों में भी लागू किया जा सकता है. ऐसे में यह पहल न केवल शहरी स्वच्छता व्यवस्था को मजबूत करने में मददगार होगी बल्कि उत्तराखंड को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक और कदम आगे बढ़ाने का अवसर भी देगी.

पर्यावरण एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के लिए किया जागरूक

कुरुक्षेत्र।गीता निकेतन आवासीय विद्यालय में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा क्षमता निर्माण कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण शिक्षा एवं प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण विषय पर कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षकों को पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, जैव विविधता, जल संरक्षण तथा प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग के प्रति जागरूक करना रहा,ताकि वे विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना विकसित कर सकें। विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ नीलू ढल एवं डॉ सुरेंद कौर सैनी रहीं।

डॉ नीलू ढल ने पर्यावरण शिक्षा के महत्त्व, जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों, जल एवं ऊर्जा संरक्षण, अपशिष्ट प्रबंधन तथा विद्यालय स्तर पर अपनाई जा सकने वाली व्यावहारिक गतिविधियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने उदाहरणों एवं समूह-चर्चा के माध्यम से समझाया कि छोटी-छोटी आदतें—जैसे जल की बचत, प्लास्टिक का सीमित उपयोग एवं वृक्षारोपण भविष्य में बड़े सकारात्मक परिवर्तन ला सकती हैं। डॉ सुरेंद्र कौर सैनी ने एक्यूआई की अवधारणा से अवगत कराया। प्रश्नोत्तर सत्र में शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपनी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया। प्राचार्य नारायण सिंह ने कहा कि वर्तमान समय में पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक नागरिक का नैतिक दायित्व है। एक शिक्षक समाज का पथ-प्रदर्शक होता है, अत: उसका पर्यावरण के प्रति सजग होना अत्यंत आवश्यक है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक सोनल मेहता केलिए प्रतीक्षा ग्राफिक्स, 127 देवी अहिल्या मार्ग, इंदौर(म.प्र.) से मुद्रित एवं 209-बी शहनाई रेसीडेंसी-2 कनाड़िया रोड इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित।संपादक: डॉ. सोनल मेहता फोन : 0731-2595008 Mail.sonal12mehta@yahoo.co.in 9755040008